

13 थियेटर और विज्ञान



नीलांजन पी. चौधरी

थियेटर विज्ञान की उत्तेजना और समृद्धता को सम्प्रेषित करने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है।

1959 में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दिए गए एक प्रभावशाली व्याख्यान में ब्रिटेन के रसायनशास्त्री और उपन्यासकार सी.पी.स्नो ने युद्धोत्तर ब्रिटेन में विज्ञान और मानविकी के बीच लगातार बढ़ती खाई की ओर ध्यान आकर्षित किया था। उन्होंने बल देकर कहा था कि “...सम्पूर्ण पश्चिमी समाज का बौद्धिक जीवन निरन्तर दो ध्रुवीय समूहों में बँटता चला जा रहा है”—एक ओर तो साहित्यिक बुद्धिजीवी हैं और दूसरी ओर भौतिक विज्ञानी।

इसके आधी सदी बाद, लगता है कि दुनिया के एक गर्म भाग यानी भारत में स्थिति किसी विशेष रूप से बदली नहीं है। मैं किसी भी तौर पर स्वयं को बुद्धिजीवी कहने की कल्पना नहीं करता और इसलिए मैं भारतीय समाज के ‘बुद्धिजीवी जीवन’ पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकता लेकिन मैं यह जरूर मानता हूँ कि जिस ध्रुवीकरण की ओर सी.पी.स्नो ने इशारा किया, वह हमारे स्कूलों, कॉलेजों और दैनिक जीवन में पूरे दम—खम के साथ जिन्दा है।

भारत में विज्ञान, मानविकी और कलाओं के बीच पक्की लकीरें बहुत गहरे तक, और शुरुआती दौर में ही, खींच दी जाती हैं। औपचारिक तौर पर यह कक्षा दस के बोर्ड के इम्तिहान के बाद होता है, जब विद्यार्थियों को मानविकी, विज्ञान और कॉमर्स में से कोई एक संकाय चुनना ही होता है। यहाँ से आगे औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की कड़ाई के चलते उस 16 वर्षीय बच्ची के लिए बहुत कम स्थान रहता है जिसकी, मसलन, चित्रकला और भौतिक विज्ञान, दोनों में दिलचस्पी है (हालाँकि यह दिलचस्पी भी तब ही

बनी रह पाएगी अगर वह पिछले 10 सालों की रटन्त की प्रक्रिया से बची रह पाई हो)। विदेश के विश्वविद्यालयों में आप इंजीनियरिंग में एक मुख्य विषय के साथ फिल्म जैसा अध्ययन में एक कम महत्वपूर्ण, लघु विषय चुन सकते हैं, लेकिन भारत में तो इस बात की सम्भावना न के बराबर है। इसीलिए हैरत नहीं है कि हमें अपने मुल्क में स्टीव जॉब्स जैसा कोई व्यक्ति बहुत कम ही मिलता है, जिन्होंने इंजीनियरिंग तथा सुलेख—विद्या को एकीकृत कर लिया जिसके नतीजे में उनके ऐपल उत्पादों का उसे प्रयोग करने वालों के साथ कमाल का परस्पर निर्वाह विकसित हो पाया।

पहले से कहीं अधिक विशेषज्ञता पर आधारित संसार हमें सीधे—संकरे रास्तों की ओर ही ले जाता है और इससे कला तथा विज्ञान, दोनों की समृद्धता की हमारी समझ भी घटती है। लेकिन जब इन दोनों का मेल हो जाए तो नतीजे अप्रत्याशित और बहुत ही दिलचस्प होते हैं। मैं पिछले



माइकल फ्रेन के नाटक ‘कोपनहेगन’ का एक दृश्य

कुछ महीनों में ऐसे ही मिलन की अवस्था का हिस्सा बन पाया हूँ। मैं कभी—कभी एक थियेटर ग्रुप के साथ काम करता हूँ। उन्होंने विज्ञान और वैज्ञानिकों के दो नाटकों का मंचन किया—माइकल फ्रेन का नाटक 'कोपनहेगन' तथा बर्टोल्ट ब्रेख्त का नाटक 'द लाइफ ऑफ गैलिलियो'।

दोनों नाटक सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। दोनों में ऐतिहासिक पात्र हैं। 'कोपनहेगन' आधुनिक अणु भौतिकी के दो दिग्गजों—वर्नर हाएज़न्बर्ग और नील्स बोहर—के बीच हुई एक रहस्यमयी बैठक का एक ड्रामाई विवरण है। यह मुलाकात सितम्बर 1941 में बोहर के घर पर कोपनहेगन में हुई थी जब द्वितीय विश्व युद्ध अपने चरम पर और डेनमार्क जर्मनी के कब्जे में था। हाएज़न्बर्ग उन गिने—चुने वैज्ञानिकों में थे जो हिटलर के जर्मनी में ही बने रहे थे, जबकि आइंस्टाइन, वॉल्फगांग पॉलि, मैक्स बॉर्न जैसे वैज्ञानिक साथी देशों के साथ जा मिले थे। हाएज़न्बर्ग बहुत ही देशभक्त जर्मन थे और उन पर हिटलर के लिए अणु बम बनाने की कोशिश में शामिल होने का इल्जाम था, जिसका वे बार—बार खण्डन करते रहे थे। दूसरी ओर नील्स बोहर मैन्हाइम प्रोजेक्ट का हिस्सा थे जिसके तहत साथी देशों के वे अणु—बम बनाए गए जिनका प्रयोग हिरोशिमा और नागासाकी पर किया गया था।

फिल्म 'राशोमॉन' जैसे विवरणात्मक ढाँचे वाला यह नाटक समयकाल और स्थान के सन्दर्भ में इधर—उधर होता रहता है और हाएज़न्बर्ग तथा बोहर की उस मुलाकात को व्याख्यायित और पुनःव्याख्यायित करता है। इस महत्वपूर्ण सवाल का जवाब तलाशने के कई प्रयास होते हैं—हाएज़न्बर्ग 1941 में बोहर से कोपनहेगन में क्यों मिले? प्रत्येक नाटकीय व्याख्या दर्शकों के लिए एक अलग ही जवाब प्रदान करती है। इनमें से कुछ व्याख्याएँ इस प्रकार हैं:

1. हाएज़न्बर्ग ने वैज्ञानिक के तौर पर बोहर की अन्तरात्मा से अपील करने की कोशिश की—इस आशा के साथ कि वे साथी देशों को मैन्हाइम प्रोजेक्ट रोकने के लिए प्रभावित कर पाएँगे।

2. हाएज़न्बर्ग ने विखण्डन की भौतिकी को समझने के मकसद से बोहर के दिमाग को टटोलने—बींधने की कोशिश की ताकि वह स्वयं बम बना सकें, और

3. वे यह बताने—समझाने आए थे कि वे किस प्रकार नाट्जी वैज्ञानिकों को बम बनाने से रोक रहे थे और क्यों उनका जर्मनी में ठहरे रहना जरूरी था।

नाटक कई स्तरों पर चलता है—व्यक्तिगत, राजनीतिक और वैज्ञानिक। वह बोहर तथा हाएज़न्बर्ग के बीच व्यक्तिगत और पेशेवर रिश्ते की पड़ताल करता है, जो कभी दोस्त और सहकर्मी थे मगर अब एक—दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं। नाटक एक वैज्ञानिक की मानवीय दुविधाओं को उजागर करता है—किस प्रकार अपने अनुसन्धान में व्यस्त रहते हुए वह इस बात की परवाह नहीं करता कि "सत्य किस ओर ले जाएगा" लेकिन अचानक पाता है कि उसकी स्वाभाविक मानवीयता इस बात का ध्यान रखने के लिए उसे बाध्य करती है।



बर्टोल्ट ब्रेख्त के नाटक 'द लाइफ ऑफ गैलिलियो' का एक दृश्य

माइकल फ्रेन का नाटक 'कोपनहेगन' बहुत ही जटिल और सूक्ष्म अर्थभेद लिए हुए है। इस तीन घण्टे लम्बे नाटक में बहुत ही दुर्बोध और गूढ़ अवधारणाओं और सिद्धान्तों का जिक्र है — जैसे, सन्देह और अनिश्चितता का सिद्धान्त, श्रोडिंगर्स कैट, मैट्रिक्स मेकैनिक्स, विकीर्ण समीकरण का सिद्धान्त आदि — और इसकी वजह से यह नाटक दर्शकों के लिए बहुत ही असाधारण तौर पर कठिन अनुभव

सिद्ध होता है, और बौद्धिक स्तर पर चुनौतीपूर्ण भी। हमें तो लग रहा था कि नाटक शुरू होने के आधा घण्टे के अन्दर—अन्दर लोग नाटक छोड़कर जाने लगे।

लेकिन हमें देखकर हैरत हुई कि हॉल लोगों से खचाखच भर जाता था। जम्हाई लेने वाले एकाध व्यक्ति की बात अलग, लोग पूरे नाटक को बड़ी एकाग्रता से देखते थे। विज्ञान से बुरी तरह डरने वाले दर्शक भी कह रहे थे कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि आणविक भौतिक—विज्ञान इतना दिलचस्प हो सकता है। अन्य ने कहा कि वे नाटक में इतिहास के सजीव हो जाने की बात से रोमांचित हो उठे थे। विज्ञान में बहुत आगे तक की डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें आखिरकार समझ आ ही गया कि क्वांटम मेकैनिक्स क्या होता है (हालाँकि उनके द्वारा कही गई इस बात को तो थोड़ा सन्देह के साथ ही लेना चाहिए)।

दूसरी ओर ब्रेख्त का नाटक 'द लाइफ ऑफ गैलिलियो', जो सूर्यकेन्द्रीयता के सिद्धान्त को स्थापित करने के लिए चर्च के विरुद्ध गैलिलियो के संघर्ष को दर्शाता है, बहुत हद तक हमारी समझ के दायरे का नाटक है। सर्वप्रथम, विज्ञान की अधिकतर बातें ग्रहों और सितारों की हरकतों से सम्बद्ध हैं, जो क्वांटम मेकैनिक्स के मुकाबले बहुत कम बोझिल हैं। कहानी एकरेखीय है, बीच—बीच में हल्के—फुलके क्षण भी आते हैं। केन्द्रीय मुद्दे महाकाव्यात्मक फलक के हैं और ड्रामाई भी हैं — विज्ञान और अन्धविश्वास के बीच संघर्ष,



'द लाइफ ऑफ गैलिलियो' से एक और दृश्य

राजशक्ति बनाम विचारों की ताकत, शरीर की जरूरतें बनाम आत्मा की लालसाएँ, प्रेम बनाम ईमानदारी आदि।

लेकिन यह एक बहुत लम्बा और शब्दातिरेक का नाटक है—तीन घण्टे लम्बा है। आज के ट्विटर युग में शनिवार शाम की मनोरंजन संध्या का नाटक नहीं है यह। पर्दा उठने से पहले हम एक बार फिर बेचैन थे—और एक बार फिर दर्शकों ने अपनी संख्या और धैर्यवान उपस्थिति से हमें चौंका दिया। सबसे खुशी की बात बड़ी संख्या में बच्चों का होना था—बहुतों ने बाद में हमें कहा कि उन्हें नाटक बहुत पसन्द आया।

बच्चे बेहतरीन और सबसे सच्चे—खरे आलोचक होते हैं। वे नाम की परवाह नहीं करते—बहुत सम्भव है कि ब्रेख्त और गैलिलियो उनके लिए गुलाबी वेशभूषा में आए मंगल ग्रह निवासियों की तरह हों। वे बोरियत महसूस कर रहे हों तो बहुत जल्द और सीधे—स्पष्ट शब्दों में यह कहे बिना नहीं रहते। मैं हैरान हूँ कि किस बात ने एक ग्यारह—बारह साल के बच्चे को तीन घण्टे के लिए बाँधकर रखा होगा जब कि यह कहानी एक ऐसी खोज से सम्बद्ध है जिसके बारे में प्रत्येक आठ साल के बच्चे को जानकारी होती है।

जाहिर है, इसका जवाब कहानी सुनाने की कला की ताकत में छिपा है। थियेटर द्वारा विज्ञान की कहानी बिल्कुल ही अलग अन्दाज में बयान की जाती है।

स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में गैलिलियो का बड़ा संघर्ष एक पृष्ठ की रूखी—सूखी बात और एक—दो चित्रों तक सीमित होकर रह जाता है। लेकिन ब्रेख्त अपने उत्कृष्ट गद्य में विज्ञान और वैज्ञानिक विचार के कई अलग—अलग आयामों को तलाशते और उनकी पड़ताल करते हैं—सत्ता की अस्वीकृति ("सत्य समय की सन्तान है, सत्ता की नहीं"), प्रयोगधर्मी प्रमाण के बिना सिद्धान्त का खोखलापन ("क्या आप उन सितारों को जो आपको असम्भव और गैर—जरूरी लगते हैं, टेलिस्कोप में से देखने की जहमत उठाएँगे?"), सिद्धान्त की वैधता सिद्ध करने के लिए बारम्बार परीक्षण ("पचास बार आदमी बर्फ के टुकड़ों को तोलता है") और मानवता के प्रति विज्ञान का दायित्व (जब गैलिलियो

वैज्ञानिकों को “आविष्कारशील बौने” कहता है)।

थियेटर विज्ञान की समृद्धता और उत्तेजना को सम्प्रेषित करने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है। एक बात इसे एक अद्वितीय माध्यम बनाती है : थियेटर में मानव की उन जटिल तथा गड़ड़-मड़ड़ भावनाओं को उजागर करने की काबिलियत है जो इस संसार की व्याख्या करने वाले तटस्थ और सुरुचिपूर्ण समीकरणों के साथ रहती हैं। इनमें उन लोगों के द्वन्द्व और पसन्द, निराशाएँ और उल्लास शामिल हैं जिनके बारे में हम जानते हुए भी उन्हें वास्तव में नहीं जानते।

विज्ञान और कला के बीच के जिस अन्तर की बात सी. पी. स्नो करते हैं, थियेटर द्वारा उसे पाटे जाने की सम्भावना है। क्या थियेटर हमारे मस्तिष्क के दाएँ और बाएँ, दोनों भागों को क्रियाशील कर सकता है और बहुमुखी बच्चों को विकसित करने में मददगार हो सकता है? क्या वह पहले से अधिक संख्या में बच्चों को प्रेरित कर सकता है कि वे विज्ञान को, न कि इंजीनियरिंग, चिकित्सा या प्रबन्धन को, पेशे के रूप में देखें? क्या वह चित्रकारों को रंगों के विज्ञान

में अधिक दिलचस्पी लेने को राजी कर सकता है? अभी शायद हम इन सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश भी नहीं कर सकते क्योंकि भारत में विज्ञान-थियेटर का अनुभव बहुत ही हाल की बात है।

लेकिन मेरे विचार में विज्ञान के लिए थियेटर का असल महत्व कहीं और ही है।

हमारे मुल्क में अन्धविश्वास और अतार्किक सोच का बहुत जोर है और यह बात कभी-कभी बहुत ही कटु तरीके से सामने आती है—दूध पीते गणेश को देखने को आतुर भीड़ के रूप में, या बुराई से बचाव के मकसद से कौओं को भोजन खिलाते मुख्य-मंत्रियों के रूप में, उन प्रेमियों के रूप में जिन्हें कुण्डलियों का मिलान न होने के कारण एक-दूसरे से अलग कर दिया जाता है, और उन बच्चों के रूप में जिन्हें ग्रहणों से डरना सिखाया जाता है।

विज्ञान का थियेटर यदि लोगों को अपने संसार के बारे में वैज्ञानिक और तार्किक ढंग से सोचने के लिए उकसा सकता है, तो वह अपनी भूमिका बखूबी निभा रहा होगा।

लेखक मूल्यवान सुझावों और अन्तर्दृष्टि के लिए ‘सेण्टर फॉर फिल्म एण्ड ड्रामा’ के प्रकाश बेलावाड़ी के आभारी हैं।

References :

Copenhagen, by Michael Frayn

Life of Galileo, by Bertolt Brecht

http://en.wikipedia.org/wiki/The_Two_Cultures

<http://www.mid-day.com/news/2010/nov/101110-news-bangalore-b-s-yeddyurappa-disqualified-mla-donkey-black-magic.html>



नीलांजन पी. चौधरी इस लेख के लिखे जाने के समय अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्यरत थे। आजकल वे SAP India, बंगलौर में हैं। थियेटर, साहित्य तथा विज्ञान में उनकी गहरी रुचि है। उनसे nilanjanpc@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद:** रमणीक मोहन